अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अगस्त-2022

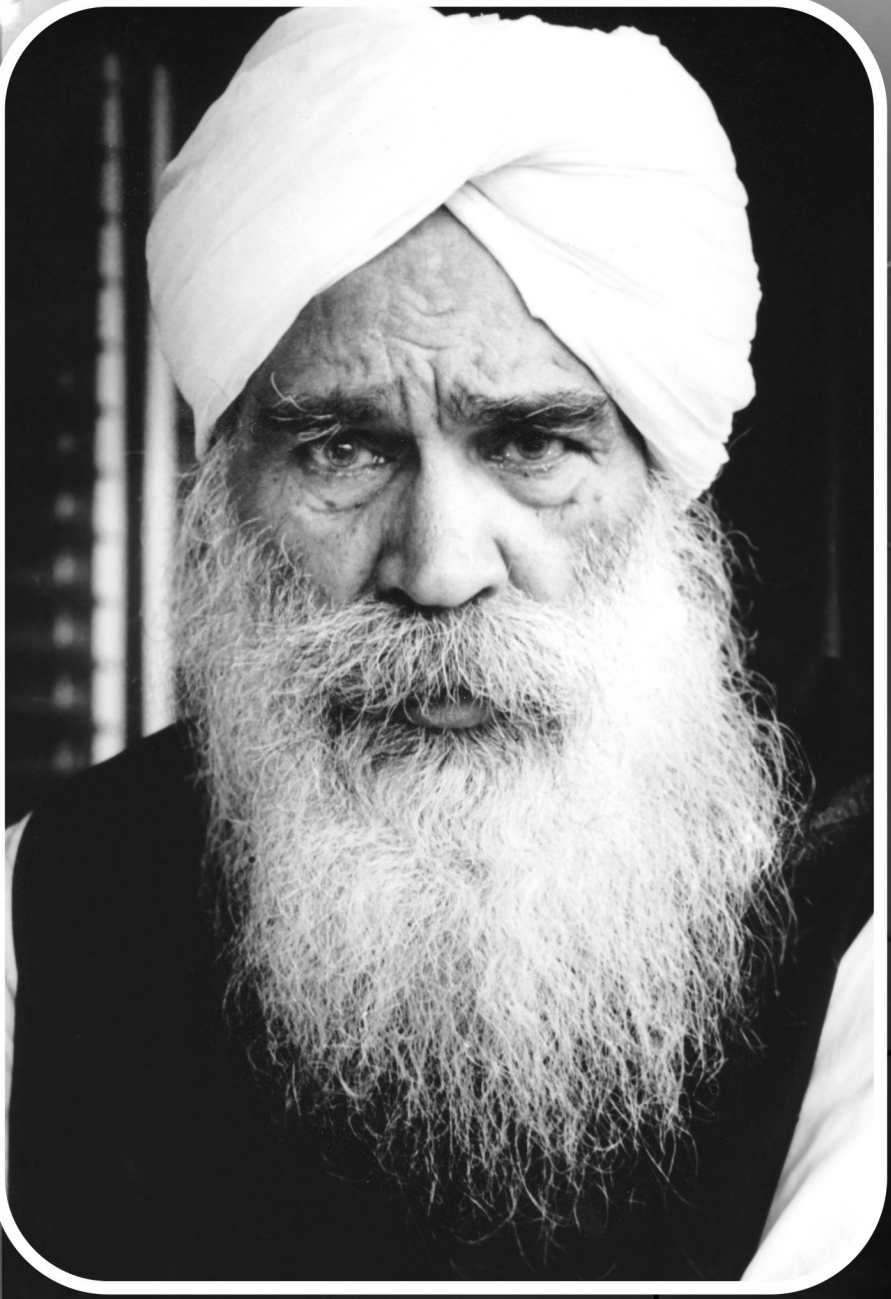

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–चौथा | अगस्त–2022

3
प्यार करने का तरीका
(एक पत्र– परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज)

7
गुरु का दीदार
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा विदाई संदेश)

11
गुरु कृपाल मेरे घर आना
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...)

23
अपने काम से काम रखें
(परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...)

31
परमात्मा का भाणा माने
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...)

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना व डॉ.सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 245 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

दु:ख कीनूं दस्सां

दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया
दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां

1 भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दु:ख दातेया x 2
करां अरजोई x 2 तेरे ताईं मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

2 जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं x 2
छड्ड दित्ता जित्थे x 2 ऐह फानी संसार आ
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

3 संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया
दु:खां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया x 2
झाक इक वारी x 2 मेरे वल मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

4 खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने x 2
जख्मी है दिल x 2 तन रोगां ने है खा लया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

5 सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया x 2
रख लै तूं रख x 2 पत्त मेरी ओ दातारेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को एक पत्र

04 मई 1965

प्यार करने का तरीका

प्यारेयो,

आप सब मेरे दिल में रहते हैं, मैं आपको प्यार भरा संदेश भेज रहा हूँ। हम सबको इंसानी जामा एक अनमोल तोहफा मिला है, परमात्मा की रचना में इसका स्थान सबसे ऊँचा है। इस धरती पर इंसानी जामें का उद्देश्य खुद को जानना और परमात्मा को प्राप्त करना है, यह काम केवल इंसानी जामें में ही पूरा किया जा सकता है।

आत्मा चेतना के सागर की एक बूँद है और अपनी छोटी सी क्षमता के अनुसार इसमें परमात्मा के सभी गुण हैं। आत्मा, मन और माया से घिरी हुई है इसलिए यह परमात्मा के असली घर को भूल गई है। सतगुरु हमें

अज्ञानता की गहरी नींद से जगाने के लिए आते हैं, हमारी मदद करने के लिए आते हैं। सभी सन्तों ने अंदरूनी विकास पर जोर दिया है।

युगों–युगों से सतगुरु इस धरती पर मानवता के मार्गदर्शन के लिए आते रहे हैं। जिन प्रेमियों को इन महापुरुषों के पवित्र चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला, उन्होंने उनके दुर्लभ अंदरूनी मिलाप का परमसुख प्राप्त किया। अभी भी ऐसी प्रेमी आत्माएं गुरु की आवश्यकता महसूस कर रही हैं, वे अपने जीवनकाल में उनसे मिलने के लिए तरस रही हैं। माँग और पूर्ति का नियम शुरु से चला आ रहा है। परमात्मा की व्यवस्था के हिसाब से जीवित गुरु ऐसी तैयार आत्माओं की संभव मदद और मार्गदर्शन करने के लिए ही आते हैं।

परमात्मा ने मुझे प्रेमियों के लक्ष्यों को पूरा करने का महान कार्य सौंपा है, मुझे उनकी मदद करके बहुत खुशी होगी। मेरे गुरु की दया है कि सौभाग्य से जो अंदरूनी जीवन की खोज करते हैं उन्हें पवित्र नामदान मिलता है। पवित्र नामदान उस पार के रहस्यों में आगे की चढ़ाई के लिए एक अनूठी शुरुआत है। सतगुरु की दया से आप में से ज्यादातर लोगों को यह दुर्लभ उपहार मिला हुआ है। अब आप पर निर्भर है कि आप नियमित रूप से, विश्वास से और सही तरीके से भजन–अभ्यास करके इसे बढ़ाएं।

मुझे खुशी है कि आप में से ज्यादातर लोग नियमित रूप से अपना समय भजन–अभ्यास को दे रहे हैं और अंदरूनी परमसुख का आनन्द ले रहे हैं। मैं आपकी सफलता की कामना करता हूँ। मैं आपको आत्मनिरीक्षण के महत्त्व पर जोर दूँगा इसलिए आपको डायरी रखने की सलाह दी गई है। सावधानी से जीवन जीने से अंदरूनी चढ़ाई में सहायता मिलती है।

मन को बढ़ावा देने वाली इन्द्रियाँ आत्मा पर हावी हो जाती हैं, उन्हें पूरी तरह नियंत्रित करके अनुशासित जीवन जीना चाहिए। इन्द्रियों को

नियंत्रित करने के लिए अंदरूनी धुन और प्रकाश से जुड़ने में बहुत मदद मिलती है। अगर आप इन नियमों का पालन करते हैं तो जीवन का अंदरूनी बदलाव अपने आप ही हो जाएगा। सच बड़ा है लेकिन सच्चा जीवन उससे भी बड़ा होता है। आप सबको एक–दूसरे से प्रेम करना चाहिए।

परमात्मा प्रेम है और प्रेम परमात्मा है। परमात्मा के पास वापिस जाने का रास्ता भी प्रेम के जरिए ही है। आपको हमेशा परमात्मा का यह नियम याद रखना चाहिए कि प्रेम से प्रेम बढ़ता है। जब गुरु के दो प्रेमी मिलते हैं तो उनकी भक्ति और सही समझ बढ़ जाती है।

भक्ति की राह में सतसंग बहुत सहायक होता है। सतसंग में गुरु की अपार दया मिलती है, सतसंग में प्रेमी गुरु की शिक्षा को ग्रहण करने के लिए इकट्ठे होते हैं। सतसंग से प्रेम पूर्वक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। हम गुरु के नाम में इकट्ठे होकर भक्ति की राह में फायदा उठा सकते हैं।

मेरे दिल में आप सबके लिए प्रेम है। गुरु पावर के लिए दूर–नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। जहाँ तड़पती आत्माएं गुरु के लिए प्रार्थना करती हैं वहाँ गुरु जरूर आता है और आपको आर्शिवाद देता है। समय किसी का इंतजार नहीं करता, समय का सदुपयोग करें। दुनियावी फायदे या नुकसान की परवाह किए बिना आपको हमेशा इस पवित्र राह पर चलना चाहिए। मौत के समय सब कुछ पीछे छूट जाएगा तब आपको पता चलेगा कि पवित्र नाम ही हमें उस पार पहुँचाएगा।

आप अभ्यास में जितनी ज्यादा तरक्की करेंगे उतना ही ज्यादा आप उस पार का सफर पूरा कर लेंगे। आप यह समझ लें कि आप इस नश्वर दुनिया में केवल पवित्र नाम का आनन्द लेने आए हैं। गुरु परमात्मा पहले, बाकी सब बाद में। अभ्यास हमारे जीवन का भोजन है, जिसे हमें नियमित रूप से खाना चाहिए ताकि हमारी आत्मा इतनी ताकतवर हो जाए कि यह दुनियावी जीवन के उतार–चढ़ाव और सुख–दुख को पार कर जाए।

आपको याद रखना चाहिए कि प्रेम सब बिमारियों का रामबाण ईलाज है। सारे पछतावे, नाराजगी, क्रोध को त्याग दें और हँसी–खुशी अपना जीवन जीएं। हमेशा खुश रहें और अपने आपको गुरु की इच्छा पर न्यौछावर कर दें। गुरु पावर की दया से आपकी रक्षा हो रही है और गुरु हमेशा आपके साथ है।

आपको दुनियावी जिम्मेदारियों के लिए सचेत रहना चाहिए और हर चुनौती का सामना करने का प्रयास करना चाहिए, बाकी सब गुरु पर छोड़ देना चाहिए। अगर आप अपनी आध्यात्मिक तरक्की के लक्ष्य को सबसे आगे रखेंगे तो गुरु की दया से दुनियावी दुखों की चुभन का दर्द खत्म हो जाएगा। एक अच्छा घुड़सवार हमेशा अपने पैर रकाब में फँसाकर रखता है अगर आप परमात्मा की ओर जाएंगे तो सब कुछ आपके हिसाब से चलेगा।

अनुशासित जीवन एक संपत्ति की तरह है, नियम बना लें कि हमेशा खुश और आभारी रहना है। प्रार्थना और आभार एक समान होते हैं। हमेशा सबके साथ प्यार और नम्रता से पेश आएं जिससे उनमें भी दया पैदा होगी और आपका मन शुद्ध हो जाएगा।

हमारे पास गिनती के दिन हैं। इससे पहले कि बहुत बड़ा बदलाव मौत आए, नामलेवा को चाहिए कि वह अपनी आत्मा को पवित्र नाम के साथ जोड़े और शारीरिक चेतना से ऊपर उठे। अगर आप एक कदम आगे बढ़ेंगे तो गुरु आपकी तरफ सैकड़ों कदम बढ़ाएगा। पवित्र भजन–अभ्यास में बिताया गया हर एक पल आपके खाते में जुड़ता है।

इन्हीं कुछ शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। आप सभी को मेरा प्यार और आध्यात्मिक तरक्की के लिए शुभकामनाएं।

आपका प्यारा,

कृपाल सिंह

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा विदाई संदेश

गुरु का दीदार

झूठी दुनियां च फसया दिल मेरा, कोई आ के बंधन तोड़ गया

हाँ भई, हम परमात्मा का धन्यवाद करते हैं जो हम जीवों की खातिर इस संसार में इंसानी चोला धारण करके आया और उसने हमें अपनी भक्ति में लगाया। कबीर साहब कहते हैंः

जो प्रभ कीए भगत ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ।

उन लोगों से डरें जो भक्ति नहीं करते। सन्तों के बिना संसार कभी सूना नहीं रहता। सन्त सदा आते हैं लेकिन जिनका भाग्य है वही उनसे फायदा उठाते हैं। हम दुनियादारों को पता नहीं कि हमने परमात्मा से कौनसी चीज माँगनी है और कौनसी चीज हमारे लिए फायदेमंद है?

आमतौर पर हम दुनिया के जीव, दुनिया में फँसे हुए हैं और यहीं फँसे रहना चाहते हैं लेकिन परमात्मा हमें 'शब्द–नाम' का भंडार देने के लिए आता है। कोई दूध माँगता है, कोई बेटा माँगता है, कोई धन–दौलत तो कोई मान–बड़ाई माँगता है लेकिन गुरु के आशिक तो सिर्फ **गुरु का दीदार** ही माँगते हैं कि किसी न किसी तरह वह मन मोहनी मूरत मिल जाए, हमारी आँखों में समा जाए।

बंदा सुख–आराम छोड़ सकता है, दुनिया छोड़ सकता है हालाँकि यह बहुत मुश्किल है लेकिन भूखे रहना भी मुश्किल है। फरीद साहब कहते हैंः

फरीदा मौतों भुख बुरी, राती सुत्ता खाके तड़के फेर खड़ी

बहुत से ऐसे आदमी हैं जो खाना नकार देते हैं, पवनहारी हो जाते हैं। बंदा आराम करना छोड़ देगा दुनिया के ताने–मेहणे आसानी से झेल लेगा

लेकिन गुरु के साथ इश्क–प्यार लगाना बहुत मुश्किल है क्योंकि अपने आपको किसी इंसान के हवाले करना बहुत ही मुश्किल है। मन अंदर बैठा है, यह कई बार गुरु पर श्रद्धा लाता है, कई बार अभाव भी ले आता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''एक बुरा ख्याल इंसान को ब्रह्मांड की चोटी से नीचे गिरा देता है।'' हम एक महीना अभ्यास करते हैं अगर एक बार भी गुरु पर अभाव आ जाए तो मन महीने की लिखी तख्ती को पोछ देता है। तख्ती पर लिखते हुए समय लगता है लेकिन साफ करते हुए समय नहीं लगता, हमारे मन की यही हालत है। उनके ऊँचे भाग्य थे जिन्होंने परमात्मा को इंसान के जामें में देखा। आगे हम अपने भाग्य से फायदा उठा रहे हैं लेकिन उसकी तरफ से कोई कमी नहीं आती। बुल्लेशाह कहते हैंः

सतगुरु के दरबार में कमी काहूँ की नाहीं
बंदा मौज न पावी चूक चाकरी माहीं

जीव उस मौज को प्राप्त नहीं कर रहा क्योंकि यह चाकरी करते हुए कई बहाने लगाता है, अहसान करता है। कहता है कि देखो जी, मैं सुबह जल्दी उठा, मैंने दस दिन भजन किया फिर भी मेरा यह नुकसान हो गया हालाँकि उसे यह नहीं पता कि इसी में उसकी बेहतरी होगी। जब जीव को पता ही नहीं कि मेरा फायदा या नुकसान किसमें है तो यह किसलिए तड़प रहा है, क्यों रो रहा है?

बेशक मेरे आगे बहुत कठिन इम्तिहान था। यह गुरु की ही दया थी कि मैं अपने गुरु के आगे खड़े होकर प्रेम–प्यार से कह सका, ''मैंने न राम देखा है, न रहीम देखा है, न ही मैं किसी में यकीन रखता हूँ। मैंने तुझे देखा है, मुझे तुझ पर यकीन आ गया है।'' यह मेरे बस का खेल नहीं था, आत्मा की आवाज थी, परमात्मा आत्मा की आवाज सुन रहा था, उसके घर में कोई घाटा नहीं।

गुरु गोबिंद सिंह जी के बहुत अच्छे–अच्छे शिष्य थे, कई राजा भी उनके पास आते थे। वहाँ भाई नंदलाल ही ऐसा था जिसने यह कहा कि *तेरी ईक नजर है, मेरी जिंदगी का सवाल है, तेरा दर्शन ही मेरे लिए नशा है* अगर और लोग भी भाई नंदलाल की तरह सोचते तो क्या वे बेदावा लिख सकते थे? गुरु ने नाम तो बेदावा लिखने वालों को भी दिया था, उनकी भी जिम्मेदारी उठाई थी। उन्होंने तो लिखकर दे दिया कि तू हमारा गुरु नहीं लेकिन गुरु ने तो कहीं यह नहीं लिखा कि तुम मेरे शिष्य नहीं हो?

आज कलयुग में जीवों की क्या हालत है? ख्याल इतने ज्यादा फैल चुके हैं कि किसी के पास इस तरफ आने की फुर्सत ही नहीं। घर से निकलते हैं तो मन अनेकों ही अड़चने डालता है। जिसके ऊपर वह दया करता है, जिसे रस आ गया कि भक्ति में यह सुख है, भक्ति के ये फायदे हैं चाहे वह कितने ही कारोबार में लगा हो वह भक्ति ही करेगा।

सन्त, सतसंगी को नाम के पास पहुँचने के लिए रास्ता देते हैं कि तुम इस रास्ते से जाओगे तो नाम के पास पहुँच जाओगे। नाम सतगुरु ने पैदा किया होता है, वह नामरूप ही होता है। जिन्होंने गुरु को पकड़ लिया उनकी भक्ति अभ्यास में ही आ जाती है। हमें यह भी यकीन है कि जिसने गुरु को समझ लिया, गुरु के साथ प्यार कर लिया वह गुरु का दिया हुआ काम भी जरूर करेगा।

सन्त–सतगुरु कहते हैं अभ्यास करें। जहाँ तक हो सके बुराई से बचें। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पापी से घृणा न करें, पाप से घृणा करें।''

कई बार ट्रेन में सफर करते हुए हमारे सिक्ख भाई तम्बाकू पीने वालों से बहुत लड़ते, मैं चुप करके बैठा रहता। उनमें से कई मुझसे कहते कि तू सिक्ख है, इन्हें मना क्यों नहीं करता? मेरे पास एक ही जवाब होता था कि मैंने सारी जिंदगी तम्बाकू से घृणा की है, इसे छुआ तक नहीं लेकिन

तम्बाकू पीने वालों से घृणा नहीं की। मैंने गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज का लेख पढ़ा है कि उनका घोड़ा भी तम्बाकू के खेत में नहीं गया था।

सांगली के राजा ने बाबा सावन सिंह जी को अपने सारे खेत दिखाए। जब तम्बाकू वाले खेत में गए तो उन्होंने उसमें पैर नहीं रखा, वे पीछे ही खड़े हो गए। बाबा सावन सिंह जी ने कहा, ''हमारे बड़े गुरुओं का घोड़ा भी तम्बाकू के खेत में नहीं गया था, हम अवज्ञा नहीं कर सकते।''

महापुरुष हमें ऐबी से नहीं ऐब से घृणा करने के लिए कहते हैं। हो सकता है उनके सुधार के लिए हमारी ही ड्यूटी लग जाए। आपने यहाँ सतसंग में जो सुना है, घर जाकर इस पर जरूर अमल करना है और अपने घरों के कारोबार भी निभाने हैं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से....

गुरु कृपाल मेरे घर आना

हुजूर कृपाल मेरे ऊपर अपार दया करके मुझे 'नामदान' देकर, जब मेरे आश्रम से वापिस जाने लगे तो उन्होंने मुझे लगातार भजन–सिमरन करने का आदेश दिया। हुजूर ने कहा, ''तुझे संसार के बारे में नहीं सोचना, तुझे किसी मीटिंग या कार्यक्रम में आने की जरूरत नहीं, लगातार आँखें बंद करके सिमरन करना है, तुम मुझसे मिलने भी नहीं आओगे। जब जरूरत होगी मैं खुद ही तुमसे मिलने आऊँगा। मैं जब चाहूँगा खुद आकर तुम्हें भजन–सिमरन से उठाऊँगा। मैंने जो काम तुम्हारे जिम्मे लगाया है तुम्हें वही काम करना है।''

मैं हुजूर की शरण में था इसलिए मैंने दुनिया की परवाह किए बिना लगातार भजन–सिमरन करना शुरु कर दिया। मैं कभी दिल्ली भी नहीं गया। मैंने लगातार अभ्यास पर ही ध्यान दिया, उस समय हजारों ही लोग मुझे मानते थे। हुजूर से मुलाकात के बाद मैंने सांसारिक लोगों से मिलना–जुलना छोड़ दिया। गुरु की आज्ञा का पालन करना बहुत जरूरी होता है।

मुझे आज्ञा पालन और अनुशासन की आदत आर्मी से पड़ी। आर्मी में यह कानून होता है कि आपको जो हुक्म दिया जाए पहले उस हुक्म को मानना जरूरी होता है अगर कोई सवाल है तो वह बाद में पूछ सकते हैं। मैंने अपने आर्मी के समय को याद किया कि मैंने किस तरह दुनियावी अफसरों की आज्ञा मानकर उन्हें अपने ऊपर खुश कर लिया था।

हुजूर कृपाल जब टूर पर राजस्थान आते तब वे मुझे देखने आते और मेरे साथ रहते। वे अपनी बीमारी के समय में भी तीन सौ मील का सफर करके मेरी देखभाल करने आते रहे।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस मालिक के दरवाजे पर जानवर बंधा है, वह मालिक जानता है कि इसे कब क्या चाहिए। जब जिस चीज की जरूरत होती है, मालिक जानवर को वह चीज देता है, जानवर को कुछ भी माँगने की जरूरत नहीं पड़ती।'' इसी तरह मैं अपने प्यारे कृपाल के दरवाजे पर बंधा हुआ था, उन्हें मेरी चिन्ता थी, मैं उन पर निर्भर था। उन्होंने अपना वायदा निभाया, वे मुझसे मिलने आते रहे और मेरी देखभाल करते रहे।

मेरे प्यारे गुरु कृपाल ने मुझे बेइन्तहा प्यार दिया, उन्होंने कभी मुझे अपने सामने नहीं बैठने दिया। कभी जमीन पर भी नहीं बैठने दिया, हमेशा मुझे अपने साथ बैठने का मान दिया। कभी भी मुझे अपने चरणों में झुकने नहीं दिया, सदा ही अपने गले लगाया। उन्होंने बहुत बार मुझे अपने साथ रहने की इजाजत दी और अपने कमरे में सुलाया।

मुझे बहुत बार उनके साथ खाना खाने का मौका मिला है। जिस तरह एक पिता अपने बच्चे को खाना खिलाता है उसी तरह वे मुझे अपने हाथ से खाना खिलाते, मुझे अपनी गोद में इस तरह बिठा लेते जैसे बच्चा अपने पिता की गोद में बैठता है।

मैं जब अपने गुरु के साथ होता, उस समय मैं आधा पागल सा हुआ करता था। मुझे इस बात की भी जानकारी नहीं थी कि मैं क्या कर रहा हूँ? उम्र के हिसाब से तो मैं बड़ा हो चुका था लेकिन अपने विचारों से बहुत भोला और बच्चों की तरह था। वे जब मुझे अपने गले लगाते, अपनी गोद में बिठाते उस समय जो खुशी और शान्ति मिलती, मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। मैं सोचता जैसे परमात्मा मुझे गले लगा रहा है, मैं परमात्मा की गोद में बैठा हूँ, मेरी पीठ पर परमात्मा का हाथ है।

जो लोग मुझे मेरे गुरु के साथ देखते वे कहते, ''कृपाल को अजायब से बहुत लगाव है।'' हुजूर मुझसे इतना प्यार करते कि देखने वाले लोग

यही कहते कि वे आत्माएं भाग्यशाली हैं जिन्हें गुरु अपने गले से लगाता है और अपनी देह को छूने देता है। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता कि गुरु कृपाल ने मुझे यह मानव शरीर दिया और खुद इंसान के चोले में मुझसे मिलने आए। उन्होंने मुझे अपनी भक्ति के लिए चुना, इतना प्यार और खुशी दी जिसे मैं भुला नहीं सकता। कबीर साहब कहते हैंः

कहत कबीर गूंगे गुड़ खाया, पूछे कहन न जाई हो

जैसे किसी गूंगे को गुड़ खिला दें वह उस मिठास का वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता, गूँगा अपनी खुशी सिर्फ नाचकर ही जाहिर कर सकता है। उसी तरह मैं बाहरी तौर पर उस खुशी को शब्दों में बयान नहीं कर सकता।

मुझे ऐसा प्यार जिंदगी में न मिला और न दोबारा मिल ही सकता है। मैं उस प्यार का वर्णन नहीं कर सकता। मैं कई बार रो पड़ता और उनसे पूछता, ''आप मुझे इतना प्यार क्यों दे रहे हैं? आप सतपुरुष हैं और मैं एक सांसारिक जीव हूँ, आप मुझ पर इतनी दया क्यों कर रहे हैं?''

मेरा जातिय तजुर्बा है अगर कोई महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी के सामने उनकी तारीफ करता तो वे इसकी इजाजत नहीं देते थे। अगर कोई गुरु की तारीफ में भजन गाता तो वे चुप रहकर भजनों को बड़े ध्यान से सुनते। मुझे महाराज कृपाल के सामने भजन गाने के बहुत मौके मिले। वे मेरे भजनों को बहुत प्यार से सुनते और खुश होते। वे भजन के हर एक वाक्य को गौर से सुनते, हर वाक्य पर अपना सिर हिलाते और मेरी तरफ इशारा करके कहते, ''हाँ, यह सही है।''

मैं भजन गाने से पहले कोई तैयारी नहीं करता था। भजन मेरी आत्मा की आवाज थे, अचानक ही जुबान पर आ जाते थे। भजनों के बारे में महाराज जी कहा करते थे, ''भजन सच्चे दिलों की तड़प हैं, फर्ज करें कि हम आग की दूसरी तरफ बैठे हैं जो हवा आग की तरफ से आएगी वह हमें गरमाहट दे जाएगी।''

भजन पवित्र आत्माओं की तड़प और भावनाएं होती हैं। उनके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की आग नहीं होती। सांसारिक जीवों और सन्तों के लिखे भजनों, कविताओं में जमीन–आसमान का अंतर होता है। सांसारिक जीव कविता, गीत अपनी बुद्धि के स्तर पर लिखते हैं लेकिन पूर्ण सन्तों के लिखे भजन, कविताएं असली घर से आए हुए शब्द होते हैं। पूर्ण सन्तों के लिखे हुए भजनों के पीछे उनकी पूरी ताकत काम करती है।

भजन गाना कोई रस्मों–रिवाज नहीं है, यह अपने गुरु का शुक्राना करने का एक तरीका है। जब हमारे अंदर गुरु के गुण गाने की आदत विकसित हो जाती है तो गुरु प्यार अपने आप ही हमारे अंदर जन्म ले लेता है। शुरुआत में मुझे अपने गुरु के सामने भजन गाने के लिए हिम्मत जुटानी पड़ी लेकिन धीरे–धीरे जो प्यार मेरे अंदर था वह बाहर आने लगा और मेरे भजन बहुत मीठे हो गए। महाराज जी को मेरे भजन बहुत प्यारे लगते थे, मेरे भजनो में गुरु प्यार ही था।

गुरु हमारे प्यार के भूखे नहीं होते क्योंकि वह खुद अपने गुरु के प्यार में जुड़े होते हैं। गुरु को हमेशा अपने शिष्यों से भजन सुनना अच्छा लगता है। अगर हम भजनों को प्यार और श्रद्धा से गाएं तो प्यार बाहर आता है। मुझे बचपन से ही भजन लिखने और गाने का शौक रहा है। मैं जब अपने गुरु के आगे भजन गाता तो इतना भावुक हो जाता कि कई बार मेरी आँखों से आँसू बहने लगते और इन भजनों को सुनने वाले प्रेमियों की आँखों में भी आँसू आ जाते। वह समय मेरे लिए बहुत कीमती और सुंदर था।

मैंने अपने भजनों में अपने प्यारे गुरु कृपाल का शुक्राना करने का प्रयास किया है। जिसके दिल में जो होता है वही उसके मुँह या कलम से बाहर आता है। मैंने अपने भजनों में यह समझाने की कोशिश की है कि परमपिता कृपाल क्या ताकत थे। जो गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेता

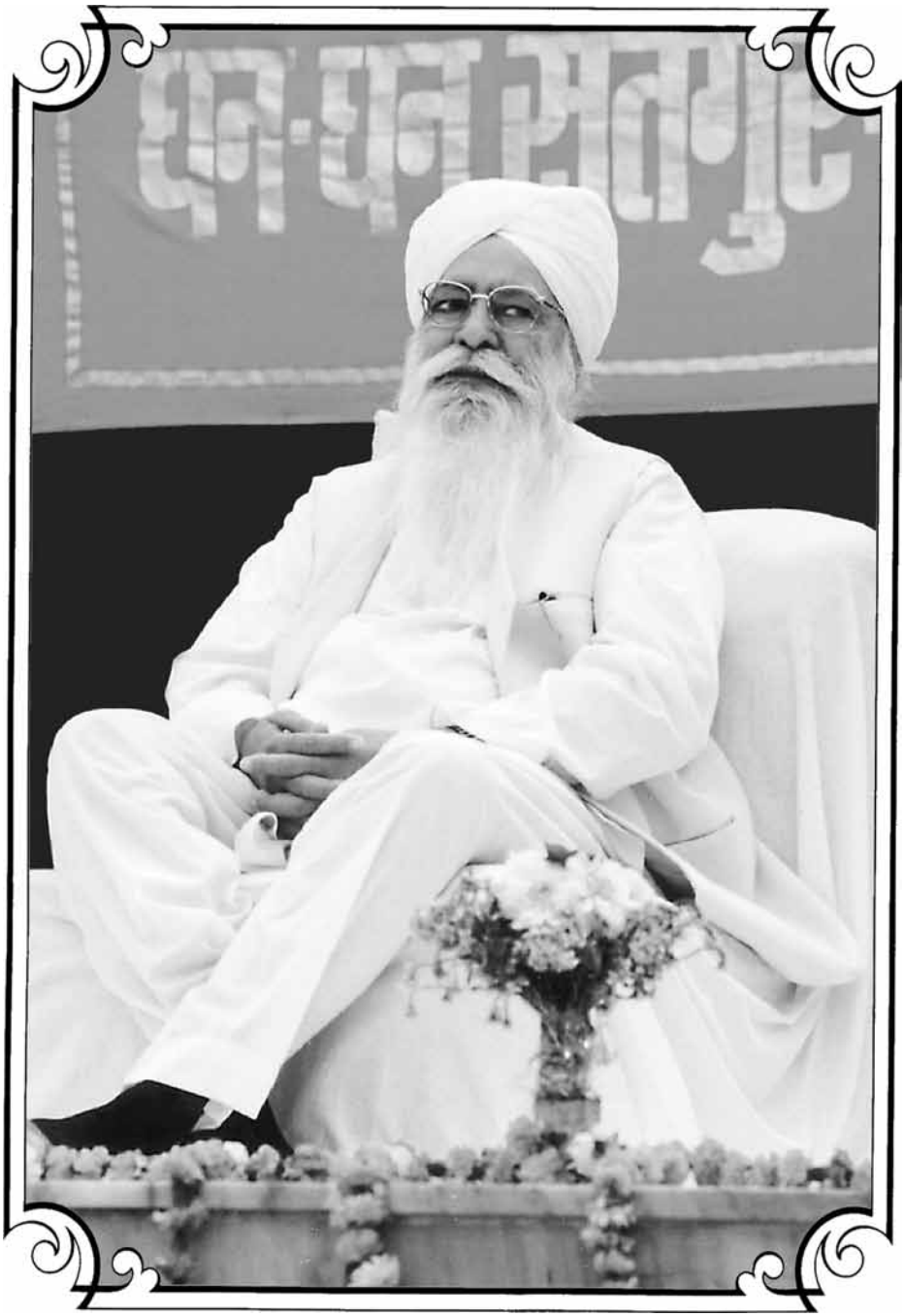
धन-धन सतगुरु

है वह शिष्य बहुत दीन बन जाता है। ऐसे शिष्य के लिए गुरु महान होता है, हकीकत में गुरु ही परमेश्वर है। मैं जब भी हुजूर सामने भजन गाता अपने आपको बहुत दीन महसूस करता। मैं बहुत बार ऐसा महसूस करता जैसे मैं उनके सामने एक छोटा बच्चा हूँ, उनकी पत्नी हूँ। एक बार मैंने उनके सामने एक भजन गायाः

मैं तेरी हो गई ओदों सोहणया, जदों तीर कलेजे विच वजया
धन कृपाल प्यारेया, रख लई तैं अजायब दी लजया।

अगर बच्चा अपने पिता की दाढ़ी पकड़ ले तो पिता उससे नाराज नहीं होता क्योंकि बच्चे में अपने पिता के लिए प्यार होता है। अगर पिता को तकलीफ हो रही है तो वह बच्चे की अंगुलियों को धीरे–धीरे हटाता है। इसी तरह पति–पत्नी के बीच शर्म जैसा कुछ नहीं होता। वे प्यार में एक–दूसरे के लिए जो भी करते हैं, दोनों में कोई भी उसका बुरा नहीं मानता। इसी तरह सच्चे शिष्य और गुरु के बीच ऐसे कई वाक्यात होते रहते हैं।

मैं जब अपने गुरु कृपाल से देह रूप में मिलता तो इतना मस्त हो जाता कि मुझे याद ही नहीं रहता था कि क्या हो रहा है, समय कैसे बीत रहा है? यहाँ तक कि मैं अपने आपको भी भूल जाता था। मैंने एक भजन के आखिर में लिखा हैः

अजायबो हो गई तेरी

'अजायब' आदमी का और 'अजायबो' औरत का नाम होता है। इस भजन में मैंने अपने आपको कृपाल की पत्नी कहा है। जब हमारे अंदर गुरु का प्यार बन जाता है तब हमारे अंदर उसे खुश करने की इच्छा बन जाती है। आत्मा पर कोई परदा नहीं रहता, वह शर्म से मुक्त हो जाती है फिर गुरु के लिए प्यार व्यक्त करने में कोई हिचकिचाहट नहीं रह जाती। जिस तरह श्रीराम, शबरी के घर गए उसी तरह मेरे गुरु कृपाल मेरे घर आए।

ग्रन्थों में एक बहुत पुरानी कहानी है। भारत में पंपासुर नामक एक जगह है। त्रेता युग में वहाँ बहुत से ऋषि–मुनियों को पता चला कि श्रीराम यहाँ आने वाले हैं तो सबको यह विश्वास था कि श्रीराम उनके आश्रमों में जरूर आएंगे क्योंकि उन्हें अपने जप–तप पर बहुत गर्व था। शबरी के दिल में हमेशा ही सन्त–महात्माओं की सेवा करने की इच्छा रहती थी। जब उसने यह सुना कि भगवान श्रीराम पंपासुर आने वाले हैं तो उसने सोचा अगर भगवान राम इस गरीब की झोपड़ी में आए तो मैं उन्हें क्या परोसूँगी? मेरे पास उन्हें खिलाने के लिए कुछ भी नहीं है।

शबरी जंगल से जाकर कुछ बेर ले आई। उसने सोचा इन बेरों को चखकर देख लेती हूँ कि ये मीठे हैं या नहीं। वह श्रीराम के प्यार में इस तरह मस्त हो गई कि उसने उन बेरों को चखकर जूठा कर दिया। जब श्रीराम पंपासुर आए तो वह किसी ऋषि–मुनि के आश्रम में नहीं गए। सीधे शबरी की झोपड़ी में गए और उन्होंने जूठे बेर खाए। श्रीराम ने यह सब शबरी के प्यार में किया। ऐसा करके उन्होंने शबरी को आदर दिया, उस गरीब की झोपड़ी को पवित्र कर दिया।

वहाँ एक तालाब था जिसका पानी गन्दा था। ऋषि–मुनियों ने श्रीराम से विनती की कि वह अपनी दया से तालाब के पानी को साफ कर दें लेकिन श्रीराम उनका घमंड तोड़ना चाहते थे इसलिए उन्होंने ऋषियों से कहा, ''आप लोग बहुत अच्छे महात्मा हैं, बहुत तप–अभ्यास करते हैं, आप अपने चरण तालाब में डालकर इस पानी को वरदान दें।'' ऋषियों ने अपने चरण तालाब में डाले लेकिन पानी गन्दा ही रहा। भगवान श्रीराम ने अपने पैर तालाब में डाले लेकिन पानी गन्दा ही रहा।

श्रीराम ने कहा, ''हम इस बूढ़ी औरत को आजमाकर देख लेते हैं।'' जब शबरी ने अपने पैर तालाब में डाले तो वह पानी पवित्र हो गया। श्रीराम ने कहा, ''भगवान के दरबार में प्यार और भक्ति ही गिने जाते हैं।''

महाराज कृपाल के आसपास बहुत पढ़े–लिखे और बहुत पैसे वाले लोग थे। आपके पास बहुत महान और ऊँचे ओहदो वाले लोग जाया करते थे। जैसे भगवान राम ने शबरी के पास जाने का फैसला किया उसी तरह परमात्मा कृपाल ने मेरे घर आने का फैसला किया। उन्होंने मेरे घर आकर, मेरे घर को पवित्र किया।

गुरु कृपाल मेरे घर आना x 2
जैसे तुम सावन दीवाने, मैं तेरा दीवाना x 2

1 *एक बार भी सच्चे मन से, जिसने तुझे ध्याया,*
भर–भर झोली दोनों हाथों, तुमने प्यार लुटाया x 2
मेरी डोर तुम्हारे हाथों, तुम मेरे जीवन साथी x 2
तुम भक्तों के भक्त तुम्हारे, ठीक नहीं मुझको ठुकराना x 2
मैं तेरा दीवाना.....

2 *शबरी के जूठे बेरों से प्यारे, तुमने मजा उठाया,*
दुर्योधन के मेवे तज के, साग विदुर का खाया x 2
केवल दास नहीं हूँ सतगुरु, मैं दासों का दास तुम्हारे x 2
जैसे सबकी लाज रखी है, मेरी भी लाज रखाना x 2
मैं तेरा दीवाना.....

3 *कैसे तुम्हें बुलाऊं सतगुरु, पता नहीं है ज्ञान नहीं,*
किसी तरह का कोई तुकब्बर, मेरे बस की बात नहीं, x 2
पल–पल के दर्शन को गुरु जी, प्यासी आँखें तरस रही हैं x 2
यही बेनती है 'अजायब' की, मुझे नहीं तड़पाना x 2
मैं तेरा दीवाना.....

पुराने जमाने में दिल्ली को हस्तिनापुर कहा जाता था। वहाँ कौरव और पांडव राज्य करते थे। जब कौरव और पांडव आपस में लड़ने लगे

तब श्री कृष्ण ने उनके बीच मध्यस्थता करके उस लड़ाई को रूकवाने की कोशिश की। कौरव और पांडव चचेरे भाई थे। श्री कृष्ण ने सोचा अगर ये आपस में लड़ेंगे तो संसार का बहुत नुकसान होगा।

दुर्योधन को अपने राजपाट का बहुत घमंड था। उसने सोचा कि मैं बहुत अहम इंसान हूँ इसलिए श्री कृष्ण सीधे मेरे घर ही आएंगे। वहाँ एक शूद्र

जाति का विदुर था। विदुर श्री कृष्ण का भक्त था, उसकी भी इच्छा थी कि श्री कृष्ण उसके घर आएं। श्री कृष्ण विदुर के भक्तिभाव को देखकर उसके घर चले गए। श्री कृष्ण जब विदुर के घर गए तो वह घर पर नहीं था। विदुर की पत्नी स्नान कर रही थी। श्री कृष्ण ने घर के बाहर से विदुर को पुकारा तो विदुर की पत्नी कृष्ण के प्यार में इतनी पागल हो गई कि वस्त्रहीन ही बाहर आ गई। श्री कृष्ण ने कहा, ''ऐ पगली, तुम्हें इतना भी अहसास नहीं कि तुम वस्त्रहीन हो, जाओ कपड़े पहनकर आओ।''

श्री कृष्ण विदुर के आने का इंतजार करने लगे। विदुर की पत्नी श्री कृष्ण को खाना खिलाना चाहती थी लेकिन उसके घर में केले के सिवाय कुछ भी नहीं था। उसने केला छीला, छिलका श्रीकृष्ण को खाने के लिए दे दिया और गिरी फैंक दी। विदुर घर आया तो यह देखकर उसने अपनी पत्नी से कहा, ''क्या तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, तुम क्या कर रही हो?'' वह एक केला और ले आई। विदुर ने उस केले को छीलकर

छिलका फैंक दिया और गिरी श्री कृष्ण को दे दी। श्री कृष्ण ने कहा, ''विदुर, जो रस उस छिलके में था, वह रस इस गिरी में नहीं है।''

रात को जब सब्जी बनाई गई तो विदुर की पत्नी उसमें नमक डालना भूल गई। श्रीकृष्ण ने खाना खाया लेकिन शिकायत नहीं की। जब विदुर ने खाना खाया तो वह बहुत नाराज हुआ। उसने अपनी पत्नी से कहा, ''क्या तुम पागल हो गई हो? पहले तुमने भगवान श्री कृष्ण को केले का छिलका खाने के लिए दिया और अब सब्जी में नमक नहीं डाला।''

अगले दिन श्रीकृष्ण ने विदुर से कहा, ''मेरे लिए कल प्यार से जो सब्जी बनाई गई थी वह खीर से भी ज्यादा स्वादिष्ट थी। वह सब्जी मेरे लिए बहुत फायदेमंद रही, मैं रात को लम्बे समय तक अभ्यास कर सका।'' जब दुर्योधन को यह पता चला कि श्री कृष्ण रात को विदुर के घर रूके थे तो वह बहुत नाराज हुआ। उसने श्री कृष्ण से कहा, ''क्या आपको हमारे महल पसंद नहीं? आपको यह भी याद नहीं रहा कि विदुर नीची जाति का है।'' श्री कृष्ण ने कहा, ''परमात्मा जाति–पाति नहीं देखता, प्यार और भक्ति देखता है।''

मैं बचपन से ही भाई गुरदास की बानी पढ़ा करता था। बानी यह कहती है अगर हम किसी गुरमुख के मुँह में एक दाना भी डालते हैं तो हमें अरब यज्ञों का फल मिलता है, इसलिए मेरे अंदर बहुत तीव्र इच्छा थी कि मैं किसी गुरमुख से मिलूं और उसे अपनी मेहनत की कमाई से खाना खिला सकूँ। मेरे अंदर यह इच्छा थी कि जब मेरे गुरु मेरे घर आएंगे तो मुझे उन्हें खाना खिलाने का मौका मिलेगा।

जब हुजूर कृपाल मेरे घर आए तो ऐसा ही हुआ। उन्होंने मुझ पर बहुत दया की। उन्होंने ताई जी से कहा, ''अब शुद्ध घी, मक्खन और गेहूँ अजायब के यहाँ से ही आएगा।'' यह मेरी बहुत पुरानी इच्छा थी जो

उन्होंने पूरी की। जैसे भगवान राम शबरी के घर गए उसी तरह कृपाल मुझ गरीब के घर आए और मुझ पर दया की।

मैं जिस एक एकड़ जमीन पर अपने प्यारे गुरु के लिए गेहूँ उगाता था। उस खेत में मैं खुद हल चलाता, पानी देता और खुद ही उस खेत की देखभाल करता था हालाँकि मेरे पास बहुत सारे नौकर थे लेकिन मैं किसी को भी उस खेत के पास नहीं जाने देता था। जिस गाय के दूध से महाराज जी के लिए घी और मक्खन बनाया जाता था, उस गाय की देखभाल भी मैं खुद ही करता था। जिस समय मैं यह सब करता उस समय मैं सिमरन करता और परमात्मा का शुक्रगुजार होता। यह सेवा मेरे लिए स्वर्गों के राज्य से भी ऊँची थी। मुझे हमेशा लगता कि मैं सबसे ज्यादा भाग्यशाली हूँ कि गुरु ने मुझे इस सेवा का मौका दिया है।

गुरु सबकी पुकार सुनता है। जब हम अपने दिल में उसके लिए तड़प और जगह बना लेते हैं तो वह जरूर हमारी प्रार्थना सुनता है। जैसे बच्चा अपनी माँ को बुलाता है तो वह देर नहीं करती। उसी तरह जब हम अपने प्यारे गुरु को पुकारते हैं तो वह सब कुछ छोड़कर हमारे पास आ जाता है।

जैसे एक अनाथ अपनी माँ को खोजता है उसी तरह यह गरीब आत्मा अपने अंदर अपनी माँ कृपाल को ढूंढ रही थी, कह रही थी, ''हे कृपाल, तुम मेरी माता हो। आओ मुझे दूध रूपी खाना दो। हे कृपाल, तुम मेरी गाय हो, मैं तुम्हारा बछड़ा हूँ, मुझे हमेशा अपनी दया का दूध दो। तुम मेरी हिरनी माता हो और मैं तुम्हारा बच्चा हूँ, तुम अपनी कृपा से मेरे जीवन–मृत्यु के फँदो को काटकर मुझे मुक्त करो। हे मेरे भगवान कृपाल, तुम चिड़िया हो और मैं तुम्हारा बच्चा हूँ, मुझे परमार्थ का खाना दो जिसे खाकर मैं मुक्त हो जाऊँ।''

गुरु इतना दयालु है कि जो उसे सच्चे दिल से याद करता है, वह फौरन उसके पास जाता है। वह जैसे ही अपने प्यारे बच्चे की सच्ची पुकार सुनता है, फौरन नंगे पैरों दौड़ा आता है। ***

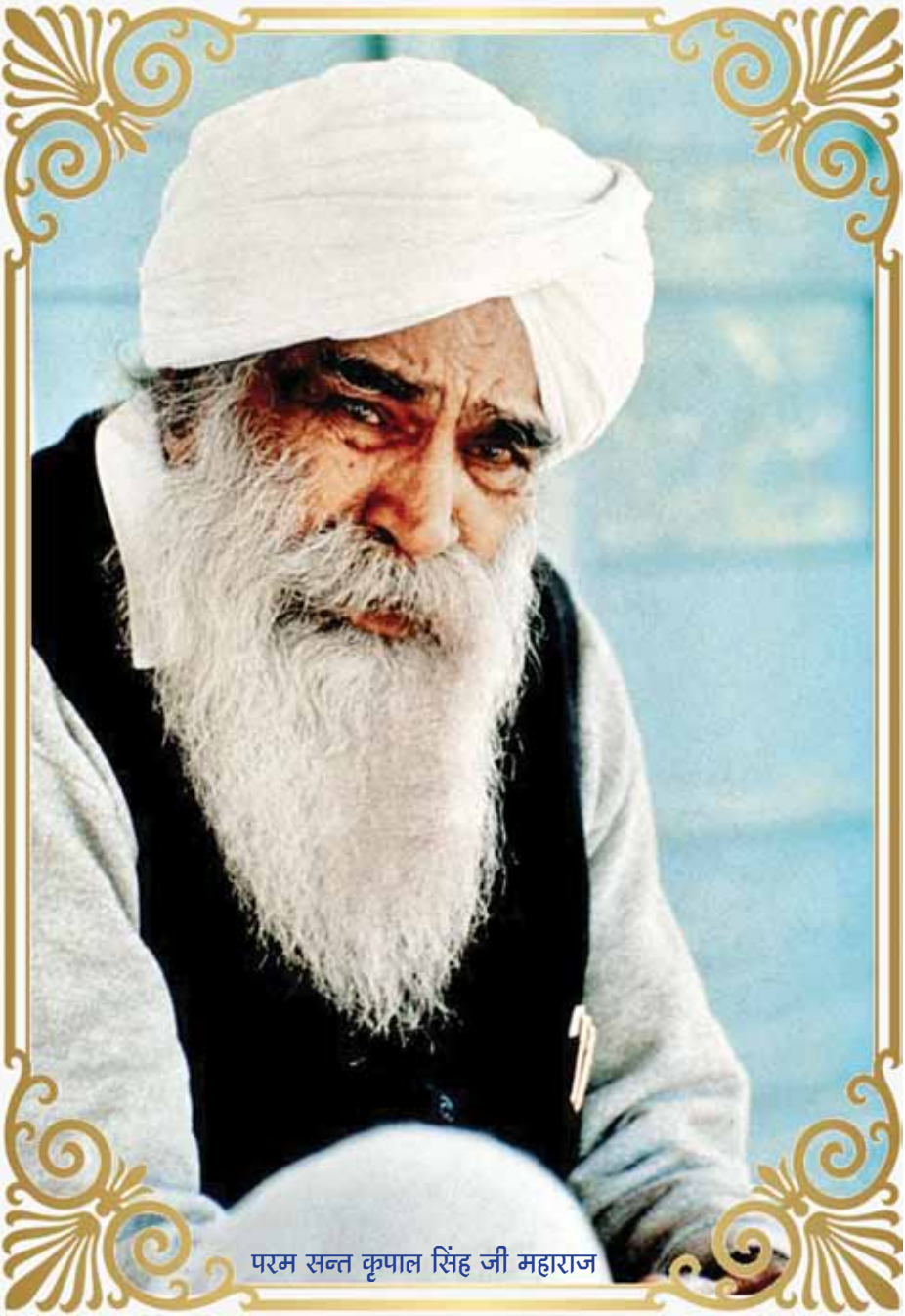

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...

अपने काम से काम रखें

11 जून 1973

लम्बी दूरी की दौड़ लगी हुई है, हर व्यक्ति अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिए दौड़ रहा है। हमें लक्ष्य पर पहुँचने के लिए सर्वश्रेष्ठ करना चाहिए अगर संभव हो तो हमें वहाँ सबसे पहले पहुँचना चाहिए और पहला पुरस्कार प्राप्त करना चाहिए।

आपको रास्ते पर डाल दिया गया है। न दाँये देखें, न बाँये देखें जो आपके पीछे आ रहे हैं उन्हें भी न देखें, यहाँ तक कि जो आपसे आगे जा रहे हैं, उनसे भी अपनी तुलना न करें। आप लक्ष्य पर पहुँचने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न करें। जो पीछे छूट गए हैं अगर आप उनकी मदद करेंगे तो आप भी सुस्त हो जाएंगे। जो आपके साथ दौड़ रहे हैं उनकी भी परवाह न करें; आप आगे जाएं। आप **अपने काम से काम रखें।** सबके लिए अच्छा सोचें लेकिन अपनी तरक्की की परवाह करें।

आप रूहानियत के लिए मेरे साथ जुड़े हुए हैं। रूहानियत में गुरु और शिष्य के बीच में किसी को भी खड़ा नहीं होना चाहिए। हम अपनी कुर्बानी देकर दूसरों की मदद करने की कोशिश करते हैं, पहले आप खुद लक्ष्य पर पहुँचे लेकिन आपको जो काम दिया गया है पहले वह काम करें। कुछ लोग दूसरों की मदद करना शुरु कर देते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि उनकी अपनी तरक्की मंद पड़ जाती है और वे कंगाल हो जाते हैं।

आप **अपने काम से काम रखें।** जब आप किसी को आगे जाते हुए देखते हैं तो आप भी आगे जाएं। जिसे 'नामदान' की जिम्मेदारी दी गई है, सबकी मदद करना उसका काम है। जब आप लक्ष्य पर पहुँच जाएंगे अगर आप योग्य हुए तो आपको यह काम दिया जा सकता है।

जैसे कोई आदमी कुएं में डूब रहा हो और वह लोगों से कहे कि तुम इस रास्ते से जाओ तो इस कुएं से बाहर निकल सकते हो। उसकी बात आपको कैसी लगेगी? इसी तरह अगर आप खुद इस संसार के कुएं में डूब रहे हैं और दूसरों का मार्गदर्शन कर रहे हैं, हमें इससे बाहर आकर आगे जाना चाहिए और अपने लक्ष्य पर पहुँचना चाहिए।

हम कभी–कभी इस रास्ते में सुस्त हो जाते हैं जिसकी वजह से तरक्की धीमी हो जाती है। कुछ अरसे के लिए हम दूसरों का मार्गदर्शन कर सकते हैं लेकिन यह पूर्ण मार्गदर्शन नहीं। यह काम गुरु का है अगर गुरु आपको दूसरों की मदद करने के लिए कहता है तो ठीक है, आप उनकी मदद करें लेकिन जब तक गुरु न कहे किसी की मदद न करें।

आप सब जो इस मार्ग पर हैं, इसे समझने की कोशिश करें। पहले आप डिग्री लें, फिर आपको दूसरों को पढ़ाने के लिए नियुक्त किया जा सकता है। हम डिग्री लिए बिना ही दूसरों की मदद करना शुरु कर देते हैं लेकिन हमारा मार्गदर्शन पूरा नहीं इसलिए हमारा भविष्य बिगड़ जाता है।

***एक प्रेमी**: आप कहते हैं कि दूसरों की मदद न करें, क्या इस बारे में आप हमें समझा सकते हैं?*

महाराज जी: आप मेरे भाव को समझें, मैं यह कभी नहीं कहता कि दूसरों की मदद न करें। मदद करने के और भी कई तरीके हैं लेकिन आप रूहानियत में किसी की मदद नहीं कर सकते। आप खुद कुँए में डूबे हुए हैं तो दूसरों को कैसे रास्ता दिखाएंगे?

***एक प्रेमी**: रूहानियत से आपका क्या अभिप्राय है, क्या हम किसी को यह बता सकते हैं कि अभ्यास में क्या करना है?*

महाराज जी: आपको नामदान दे दिया गया है, आप गुरु के पास जाएं। आप मेरे प्रवचनों की टेप सुनें। अगर आप कर्ता बनते हैं तो आप

शिक्षक बन जाते हैं। आपका छोटा सा अहंभाव गुब्बारे की तरह फूल जाता है और आपकी तरक्की रूक जाती है। शिक्षक न बनें, गुरु ने जो कहा है आप उसे दोहरा सकते हैं। आप यह कह सकते हैं, ''सतगुरु ने यह समस्या इस तरह समझाई है।'' लक्ष्य पर पहुँचने वाले बहुत लोग होंगे, खरगोश तेजी से दौड़ रहा है; जो लोग पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर आएंगे उन्हें पुरस्कार मिलेंगे।

भगवान कृष्ण ने कहा है, ''हर एक को इस रास्ते पर डाला जाता है लेकिन हजारों में से कोई एक ही मेरे पास आता है।'' दूसरों के लिए अच्छा चाहना एक अलग बात है। ग्रंथ शिक्षाओं से भरे हुए हैं, आप वहाँ कर्ता नहीं हैं लेकिन मन एक शातिर मित्र है अगर आप किसी के लिए कुछ करते हैं और अपने दिल में खुशी महसूस करते हैं कि मैंने उसे कुछ सिखाया है, बस, वही खराब कर देता है।

मैं जो मुद्दा उठा रहा हूँ उसे समझें, **अपने काम से काम रखें।** कभी–कभी आप सोचते हैं कि कोई आपसे ऊँचा है। आप आगे बढ़ें, तुलना करने से कभी–कभी कुछ गलत हो जाता है। हम दूसरों को नीचा दिखाते हैं और हमें उसका भुगतान करना पड़ता है। आप दौड़ रहे हैं, दौड़–दौड़कर लक्ष्य पर पहुँचें। जो लक्ष्य पर पहुँच जाता है हर कोई उसे कहता है, ''वाह! यह जीत गया।'' गुरु के थोड़े से शब्द अमूल्य होते हैं।

दूसरों से अपनी तुलना करना हमारे रास्ते में रूकावट खड़ी करता है, आप **अपने काम से काम रखें।** कोई हाथ में दीपक लिए हुए दूसरों को रोशनी देता हो लेकिन खुद अंधकार में हो तो? परमात्मा ने आपको सतगुरु से मिलाया है। आप अपने दिल में सबके लिए आदर रखें लेकिन देखें कि आपका गुरु क्या कहता है? हम दूसरों को मिठाई बेच देते हैं, हम वह मिठाई खुद क्यों नहीं खाते? जो जैसा बोएगा वैसा काटेगा। यहाँ तक अवतार और सन्त भी इस कानून से नहीं बच सकते।

गुरु के पास बैठकर आप सैकड़ों वर्षों की शिक्षा से ज्यादा प्राप्त कर सकते हैं। जब आपका घर जल रहा होता है उस समय आपका क्या फर्ज बनता है। क्या यह पूछना कि घर क्यों जल रहा है या यह आग किसने लगाई? पहले बाहर निकलें। लेकिन हम क्या कर रहे हैं? हम दूसरों को रास्ता दिखाना चाहते हैं। पढ़े–लिखे लोग वहाँ तक ही राह दिखा सकते हैं जहाँ तक वे पहुँचे हैं। हमारा पहला काम इस देह के कैदखाने से बाहर आना है। केवल बातें करने से परमात्मा की बादशाहत नहीं मिलती, परमात्मा की बादशाहत आपके अंदर है।

जब हम शरीर की चेतना से ऊपर उठते हैं तो वहाँ से ABC शुरु होती है। मरना सीखें ताकि आप जीना शुरु करें। दोनों आँखों के बीच तीसरे तिल पर आएं। जो यहाँ नहीं आते वे बाहरी डाकुओं द्वारा पकड़े जाने पर भस्म हो जाते हैं। जिसे गुरु ने अपने सरक्षण में लिया है वह उसकी संभाल करेगा, यह गुरु की जिम्मेदारी है।

मेरे पास किसी प्रेमी का पत्र आया है जिसमें उसने यह दावा किया है कि वह लक्ष्य पर पहुँच गया है और उसे गुरु बनने का हुक्म दिया गया है। मैंने उसे जवाब दिया कि यह मेरी जानकारी में नहीं है अगर आप ऐसा करना चाहते हैं तो यह आपकी अपनी जिम्मेदारी है। मैं आपकी तरक्की की कामना करता हूँ। गुरु का काम बहुत नाजुक होता है।

एक प्रेमी: *मान लें कि कोई व्यक्ति मेरे पास आया और मुझे यह अहसास हुआ कि वह परमात्मा के नशे में मस्त है। क्या मुझे उससे यह पूछने का अधिकार है कि भाई, क्या तुम मुझे थोड़ी सी रहनुमाई दे सकते हो ताकि मैं भी थोड़ा सा तुम्हारी तरह बन जाऊँ?*

महाराज जी: इसका मतलब तो यह हुआ कि आपको अपने गुरु में कोई विश्वास नहीं।

एक प्रेमी: *फिर तो उससे यह नहीं माँगना चाहिए?*

महाराज जी: आप अपने गुरु से क्यों नहीं माँगते, वह किसलिए है क्या गुरु आपको कुछ भी देने के काबिल नहीं? जिसने आपको इस मार्ग पर अभी तक इतना कुछ दिया है क्या वह आगे देने में माहिर नहीं?

***एक प्रेमी**: अगर हम यह सब करेंगे तो आपके पास श्वास लेने की भी फुर्सत नहीं बचेगी?*

महाराज जी: मान लें कि मैं आपको अपना गुरु मानता हूँ। मैं किसी और से मदद तभी माँगूगा जब मुझे लगेगा कि आप पूर्ण नहीं हैं। गुरु का एक श्रद्धालु नदी में डूब रहा था, वहाँ उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था। अचानक उसकी मदद के लिए एक हाथ निकला, आवाज आई, ''आ जा मैं तेरी मदद करूंगा।'' डूबते हुए श्रद्धालु ने पूछा, ''तू कौन है?'' आवाज आई, ''मैं भगवान हूँ।'' श्रद्धालु ने कहा, ''मुझे अपने गुरु के अलावा किसी और की मदद नहीं चाहिए।'' फिर एक हाथ निकला उसने कहा, ''आ जा मैं तेरी मदद करूंगा।'' श्रद्धालु ने कहा, ''तू कौन है?'' आवाज आई, ''मैं पैगम्बर मौहम्मद हूँ।'' श्रद्धालु ने कहा, ''मुझे आपकी मदद नहीं चाहिए, मुझे अपना गुरु चाहिए।'' तभी उसका गुरु प्रकट हुआ और उसने अपने श्रद्धालु को बचा लिया।

हम दूसरों की ओर इसलिए देखते हैं क्योंकि गुरु के लिए हमारे प्यार में कुछ कमी है। अगर गुरु में कमी है तो वह अलग बात है लेकिन गुरु तो गुरु है। अगर गुरु प्राइमरी कक्षा तक का है तो वह आपको वहाँ तक का ही मार्गदर्शन दे सकता है अगर गुरु हाईस्कूल पास है तो वह आपको वहाँ तक लेकर जा सकता है अगर वह उससे आगे जाता है तो वह आपको आगे जाने में रहनुमाई दे सकता है।

कोई भी इंसान जहाँ तक वह खुद पहुँचा है, आपको वहाँ तक ही लेकर जा सकता है। अपने आपको गुरु कहलवाने वाले सभी गुरु नहीं होते इसलिए परखने के लिए आपको *पाँच पवित्र* नाम दिए गए हैं। अंतर में जो

इन नामों के सिमरन के आगे खड़ा रहता है वह सबसे ऊपर जाता है। यह पवित्र नाम आपको अंतर में किसी भी बुरे असर से बचा सकते हैं, बाहर से ज्यादा भ्रम अंतर में है।

मौलाना रूमी हमें हिदायत करते हैं, ''बिना किसी मार्गदर्शक के इस रास्ते पर न जाएं। वहाँ बहुत खतरे हैं, बहुत गिरावटें है।'' जिस तरह बाहर हमारे पास सरकार है उसी तरह ऊँचे मंडलों पर भी सरकार है।

भगवान कृष्ण बहुत लोगों से मिला करते थे। मैं जब लाहौर में था एक आदमी ने मेरा प्रवचन सुनने के बाद मुझसे कहा कि उसने अंतर में भगवान कृष्ण को देखा है। मैंने उससे कहा, ''ठीक है, जब तुम दोबारा भगवान कृष्ण से मिलो तो उनसे पूछना कि आगे क्या करना है?'' भगवान कृष्ण भी शब्द–योग के मानने वाले थे, उनका काम अलग था लेकिन हम उनका आदर करते हैं। बाद में उस आदमी ने मुझे बताया कि उसने भगवान कृष्ण को अंतर में देखा और भगवान कृष्ण ने उससे कहा, ''अगर तुम उनके पास जा रहे हो तो तुम्हें मेरे पास आने की जरूरत नहीं।''

एक नियमित सरकार है जो काम कर रही है। लोग सोचते हैं जिस तरह राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के लिए वोट पड़ते हैं, यह वोटिंग से नहीं होता। चतुराई आपके काम नहीं आएगी। कुँए में डूबता हुआ आदमी दूसरों को नहीं बचा सकता। वह केवल कह सकता है कि यह करो, वह करो लेकिन वह कोई प्रैक्टिकल मार्गदर्शन नहीं दे सकता। जब उसका अपना घर जल रहा है तो वह कैसे दूसरों को जलते हुए घर से बाहर निकालने में मदद कर सकता है। आप **अपने काम से काम रखें**।

आप सबको आदर दें अगर दूसरे लोग अपने आपको गुरु कहलवाते हैं तो यह उनका भाग्य है। आप उनके लिए प्रार्थना करें अगर हम किसी के लिए आदर खो देते हैं तो इसमें हमारा ही नुकसान होता है, यह बहुत ही नाजुक मसला है।

जब गुरु नानक साहब संसार मंडल छोड़ने वाले थे तो उस समय लोगों ने उनसे पूछा, ''हम आपको दोबारा कैसे प्राप्त करेंगे।'' उन्होंने बहुत अच्छा उदाहरण दिया, ''आपका मित्र हमेशा ही यहाँ मौजूद होगा अगर वह दूसरे कपड़ो में आ जाए तो क्या आप उसे नहीं पहचानेंगे?''

जब मेरे गुरु ने मुझे सतसंग करने के लिए कहा तो मैंने उनके आगे विनती की, ''मुझे यह काम न दें कोई और काम दे दें, आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।'' उन्होंने मुझसे पूछा, ''क्यों?'' मैंने जवाब दिया, ''जब लोग आपको आदर से देखते हैं तो उनका आप पर उधार हो जाता है उनको कुछ देना पड़ता है, मेरे पास है ही कितना?'' उन्होंने कहा, ''मेरा हाथ तुम्हारे सिर पर है।'' फिर उन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखकर कहा तुम क्यों डर रहे हो? जब आप गुरु के बारे में सोचते हैं, सब कुछ गुरु के नाम पर करते हैं, तब करने वाले आप नहीं, आप बच जाते हैं।

एक अधन्ना सा इंसान सतसंग करना शुरु करता है, अपने दिल की तह में अपने आपको गुरु समझने लगता है। वह कहता है कि वह कुछ भी नहीं है लेकिन दिल में महसूस करता है कि वह कुछ है। जब वह ऐसा सोचने लगता है तो सारा उधार उसके बैंक बैलेंस (खाते की देनदारी) में चला जाता है।

प्यारे दोस्तो, क्या आपको आज का सतसंग समझ आया? आप अपने आपको बचाएं, **अपने काम से काम रखें।** परमात्मा आपको आर्शिवाद देगा, आप दौड़ में हैं, लक्ष्य पर पहले पहुँचें। दाँये या बाँये न देखें। यह न देखें कि कौन तेज दौड़ रहा है और कौन पीछे रह गया है। सबके लिए शुभकामनाएं रखें, परमात्मा से प्रार्थना करें। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

तेरे भाणे सरबत दा भला।

हे परमात्मा, सबको अपने पास आने दें, सबको अपने से मिलने में मदद करें।

हजारों ही लोग इस मार्ग पर चलना शुरु करते हैं लेकिन ज्यादातर रास्ते में ही गिर जाते हैं। हजारों में कोई एक ही लक्ष्य तक पहुँचता है, बाकी पिछड़ जाते हैं। जब गुरु आपको कुछ करने के लिए कहे, तभी करें और कभी भी उसका क्रेडिट अपने आपको न दें। जब आपके पास आपका गुरु है, जो वह कहता है आप वही करें। सबसे प्यार करें अगर परमात्मा उन्हें पहले नम्बर पर लाना चाहता है तो वह पहले नम्बर पर आएंगे, आप उनके लिए कर्ता न बनें।

मैं कोई वक्ता नहीं हूँ लेकिन जब कोई विषय होता है तो बातें निकल ही आती हैं। परमात्मा का शुक्र है। **अपने काम से काम रखें।** सभी लोग अपना भजन–अभ्यास करते रहें। आप दूसरों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। गुरु सबकी मदद करेगा लेकिन जो सबको दे सकता है उससे प्रार्थना करें। ध्यान रखें कि आप देने वाले नहीं हो।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...

परमात्मा का भाणा माने

किसी गाँव में एक बूढ़ा फकीर रहता था, वहाँ अकाल पड़ गया। गाँव के लोग इकट्ठे होकर उस बूढ़े फकीर के पास गए कि आप हमारे हक में परमात्मा के आगे दुआ करें कि बारिश हो जाए ताकि फसल अच्छी हो। फकीर ने कहा, ''आप लोग थोड़ी देर रूक जाएं, **परमात्मा का भाणा माने**।'' गाँव के लोग वापिस चले गए।

फिर उस गाँव के सारे कुत्ते मर गए। गाँव के लोगों ने उस फकीर के पास जाकर कहा कि हमारे गाँव के सारे कुत्ते मर गए हैं। फकीर ने कहा, ''आप **परमात्मा का भाणा माने**।'' फिर उस गाँव के सारे मुर्गे मर गए। गाँव वालों ने फिर फकीर के पास जाकर विनती की। फकीर ने कहा, ''आप लोग परमात्मा का भाणा माने।'' एक दिन ऐसा हुआ कि गाँव की सारी आग बुझ गई। उस समय आज की तरह वैज्ञानिक युग नहीं था माचिस का कोई साधन नहीं था, लोग पत्थर पर पत्थर मारकर आग पैदा करते थे। आमतौर पर उस अग्नि को दबाकर रख लेते थे।

गाँव के लोग फिर फकीर के पास गए। फकीर ने कहा, ''आप लोग **परमात्मा का भाणा माने**, परमात्मा जो करता है अच्छा करता है।'' वे लोग बहुत परेशान हुए कि बारिश नहीं हुई तो हमारी फसलें तबाह हो गई। हमारे कुत्ते मर गए, मुर्गे मर गए लेकिन फकीर यही कहता है कि भाणा माने। अब हमारे सारे गाँव की आग बुझ गई हैं फिर भी फकीर यही कहता है, ''भाणा माने।'' इसके पास आने का क्या फायदा?

कुछ दिनों बाद कोई बादशाह कत्लेआम करता हुआ उस गाँव की तरफ से निकला। उसने अपने लश्कर से कहा, ''देखो, आस–पास कोई

आबादी है, कुत्ते भौंक रहे हैं? लेकिन कुत्ते तो मर चुके थे फिर बादशाह ने कहा, ''मुर्गे बोल रहे हैं?'' लेकिन मुर्गे तो मर चुके थे। फिर बादशाह ने कहा, ''अगर यहाँ कोई आबादी है तो चूल्हे से धुँआ निकल रहा होगा?'' लश्कर ने कहा, ''यहाँ कुछ भी नहीं है।'' वे लोग उस गाँव से दूर चले गए कि यहाँ तो कोई आबादी नहीं, हम अपना समय क्यों खराब करें।

जब गाँव वालो को पता चला कि बादशाह कत्लेआम करता हुआ यहाँ से निकला था लेकिन उसे निशानियाँ नहीं मिली तो वह यहाँ से दूर निकल गया। अब गाँव वालों ने उस फकीर के ऊपर अपना ईमान तो लाना ही था बल्कि फकीर के पास जाकर लाख–लाख शुकर किया।

सन्तों की बात के राज का पता बाद में लगता है इसलिए परमात्मा कृपाल ने हमें भाणा मानने पर जोर दिया है। जब परमात्मा का भाणा टलता ही नहीं, वह मालिक बेअन्त, बेमुख्तियार है तो हमें चाहिए कि हम सब **परमात्मा का भाणा माने**, इंसानी जामें की कद्र करें।

सारे गुरसिक्ख मिलकर बैठें, कोई पराया नहीं क्योंकि सबके अंदर वह परमात्मा है। पशु, पक्षी, इंसान, हैवान सबके अंदर परमात्मा है इसलिए हमें किसी के साथ नफरत नहीं करनी चाहिए। ***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

भक्ति की राह में सतसंग बहुत सहायक होता है। सतसंग में गुरु की अपार दया मिलती है, सतसंग में प्रेमी गुरु की शिक्षा को ग्रहण करने के लिए इकट्ठे होते हैं। सतसंग से प्रेम पूर्वक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। हम गुरु के नाम में इकट्ठे होकर भक्ति की राह में फायदा उठा सकते हैं।

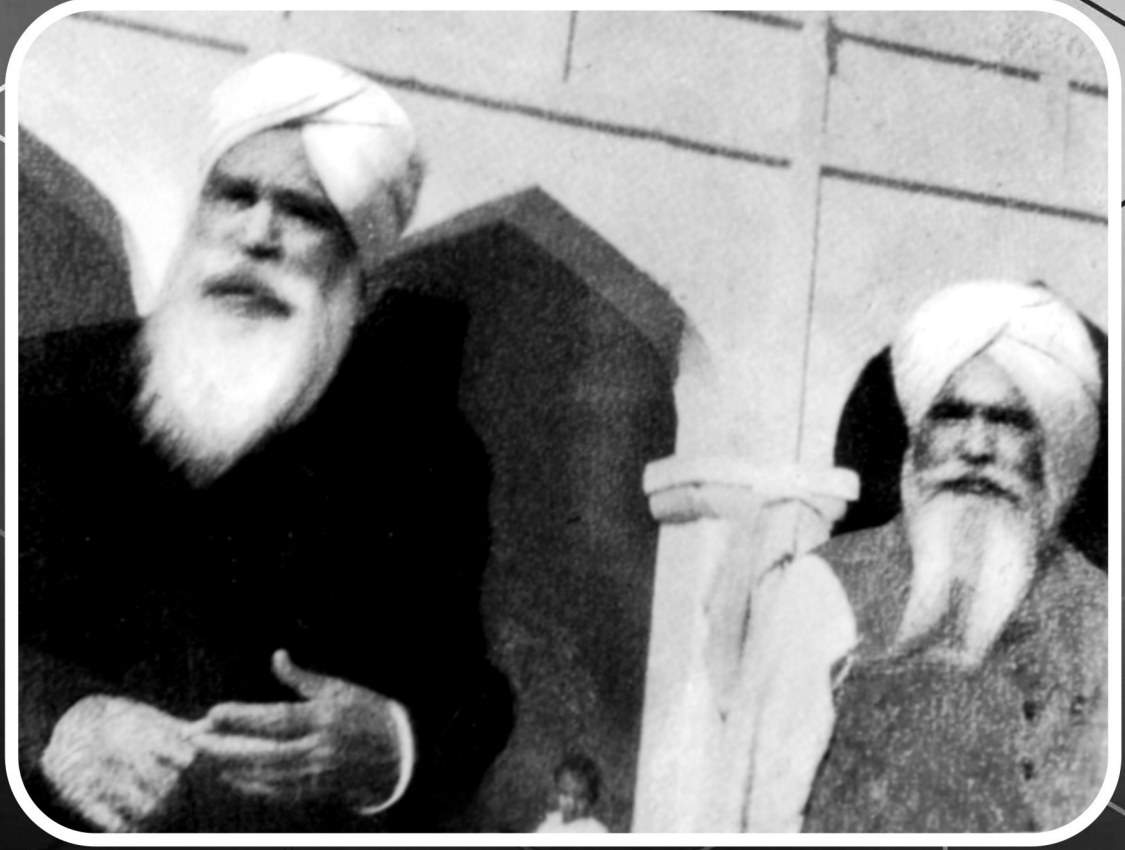

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज व परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज